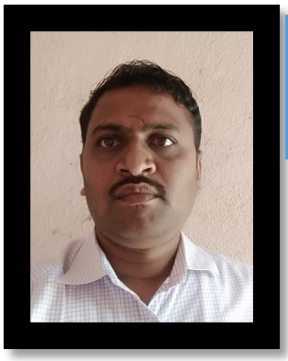


# डॉ. जयराम सूर्यवंशी

नांदेड (महाराष्ट्र)


# झूठे सच का पर्दाफाश : सच और है

समकालीन हिन्दी ग़ज़ल को समृद्ध करने में अपनी विशेष भूमिका निभानेवाले ग़ज़लकारों में ग़ज़लकार विनय मिश्र का स्थान विशेष रहा है। समकालीन हिंदी ग़ज़ल परंपरा पर गहन चिंतन करते हुए उन्होंने ग़ज़लकार जहीर कुरेशी के व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व पर 'जहीर कुरेशी महत्त्व और मूल्यांकन' इस महत्त्वपूर्ण ग्रंथ का कुशल संपादन किया है। इसके अलावा 'बनारस की हिंदी ग़जलें' इस शीर्षक से बनारस के ग़ज़लकारों की ग़ज़लों का संपादन किया है। वरिष्ठ आलोचक जीवन सिंह ने अपनी रचना 'दसख़त' में और नचीकेता जी ने 'अष्टछाप' इस रचना में हिंदी के चंद प्रातिनिधिक ग़ज़लकारों में विनय मिश्र को स्थान दिया है इससे उनके हिंदी ग़ज़ल साहित्य में योगदान को आसानी से समझा जा सकता है। विनय मिश्र एक उच्च कोटि के ग़ज़लकार तो है ही साथ ही एक कुशल संपादक भी है। ग़ज़लकार, आलोचक, अध्यापक विनय मिश्र का प्रथम गजल संग्रह 'सच और है' सन् 2015 में मेधा बुक्स दिल्ली से प्रकाशित हुआ तदोपरांत सन् 2018 में 'तेरा होना तलाशूँ' यह दूसरा ग़ज़ल संग्रह भी शिल्पायन बुक्स दिल्ली से प्रकाशित हुआ।

'सच और है' इस ग़ज़ल संकलन में कुल 102 ग़ज़ले हैं जिसके माध्यम से ग़ज़लकार ने तमाम सामाजिक मूल्यों पर बडे विस्तार से चिंतन किया है, साथ ही इस साम्राज्यवादी अपसंस्कृती के दौर में नीजि स्वार्थ के लिए, सत्ता की लालसा से, आर्थिक लाभ के लिए परोसे जा रहे झूठे सच को बेनकाब करते हुए 'सच कुछ और ही है' यह मौलिक संदेश दिया है। ग़ज़ल संकलन की भूमिका वरिष्ठ ग़ज़ल आलोचक नचीकेता जी ने लिखी है जिसमें ग़ज़ल संग्रह के उद्देश्य पर चर्चा करते हुए वे कहते हैं, 'विनय मिश्र अपनी ग़ज़लों के जरिए आज के बहुत ही अमानवीय, नृशंस और असंवेदनशील समय, समाज और व्यवस्था में उम्मीद की गरमाहट बचाकर रखना चाहते हैं, क्योंकि परस्थितियाँ सारी मानवीय उम्मीदों का गला घोट देने के लिए तरह-तरह के प्रपंच कर रही है'। नचीकेता जी की उपरोक्त मान्यता के अनुसार प्रस्तुत ग़ज़ल संकलन में परिस्थितियों की मार से दबे, कुचले मनुष्य समुदाय को इस भयावहता से उभरने के लिए गहन चिंतन किया है, क्योंकि स्वयं ग़ज़लकार की मान्यता भी यही है कि, 'इस विडंबणा, भेद और विषमता भरे दौर से गुजर रहे आवाम की समस्या की ओर ध्यान देना हमारा दायित्व है, और इस दायित्व

को मैं अपनी ग़ज़लों के माध्यम से पूरा कर रहा हूँ। मौजूदा दौर में देश की राजनीति में बहुत बडा बदलाव आया है परिणामस्वरूप सत्ता के सिंहासन पर बैठे नेता जनता के विकास की दृष्टि से काम करने की अपेक्षा बेमतलब की बातों पर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं। धर्म और सियासत जो एक दूसरे से दूर होने चाहिए, किंतु यहाँ धर्म और सियासत की साँठगाँठ करके अपनी कटू नीतियाँ पूरी की जा रही है। ऐसे हालात में निश्चीत ही आम आदमी, उसका स्वास्थ्य, विकास, रोजगार, महिला उत्थान, दलित-आदिवासियों की समस्याएँ इन विषयों को कोसो दूर रखा जा रहा है। इसलिए ग़ज़लकार विनय मिश्र अपनी एक ग़ज़ल में कहते हैं।

ढोल सियासत पीट रही है, जो दिन रात विकास का,

पेट भर का झूठ यही है, भुखों का सच और है।

यही सियासतदाँ मंचों से तो बडी खूबी से शांती, अमन की बातें करते हैं, किंतु इनके ही नुमाइंदे मंदीर-मस्जिद के नाम पर, सांप्रदायिकता के आधार पर, प्रादेशिक अस्मिता के बहाने, भाषाई अस्मिता को उकेरकर एक दूसरे का कत्ल करने पर उतारू हो रहे हैं। इस सच्चाई को विनय जी सांकेतिकता से अभिव्यक्त करते हैं।

मंच के उपर कबुतर उड रहें,

और नीचे लाशो का अंबार है।

बाजारवादी ताकतों ने आम आदमी के जीवन पर कब्जा किए कई साल हुए हैं फिर भी दिन ब दिन बाजारवादी अपसंस्कृति हमारी भावनाओं, संवेदनाओं के साथ खेल रही है, उसकी दृष्टि से इन्सान महज एक वस्तु है जिसकी कुछ कीमत है, वह चुकाई तो उसका सब कुछ समाप्त हो गया यह स्थिति बडी खतरणाक है। यह बाजारवादी ताकते इतनी खूबी से हमारे घरों पर कब्जा कर रही है कि हमें पता भी नहीं चल रहा है। ग़ज़लकार विनय मिश्र समग्र ग़ज़ल संग्रह में जगह जगह बाजारवादी अपसंस्कृति का विरोध करके मानवता की बात करते हैं इस संदर्भ में एक ग़ज़ल देखिए-

हमारा काम है बाजार में भी आदमी गढ़णा,

तुम्हारा काम घर आँगण को भी बाजार करना है।

एक वक्त था राजनीति साधन थी और समजासुधार साध्य था। किंतु आज हालात ऐसे हो गये हैं कि राजनीति ही साधन बन गयी है और राजनीति ही साध्य, सामाजिक कार्य तो केवल बहकावा है। सभी कथित नेताओं का मुख्य उद्देश्य राजनीति में अपनी धौंस जमाना, उसके बलबुते पर गलत काम निपटा देना, और भ्रष्टाचार के जरिए मालामाल होकर लोगों को अपने काबु में रखना। ऐसी राजनीति की कुटिल राह सामान्य आदमी के बस की बात नहीं है, वह तो इस राह पर दो-चार कदम चलकर ही थक जाता है या किसी झूठे फंदे में फँसाकर इस राह से बाहर फेंक दिया जाता है। आम आदमी के लिए राजनीति बहुत दूर की कौडी है, वहाँ सफल होना है तो तुम्हारे पास जाती का, क्षेत्रीयता का, वंश का, संपत्ती का कार्ड होना चाहिए। इसलिए ग़ज़लकार आम आदमी को सचेत करते हुए कहते हैं,

बहुत गहरी सुरंगे है सियासत में सम्हल जाओ,

कदम दो चार पडते ही न पाओगे निशानी भी ।

ऐसी कुटील राजनीति में सत्ता के लिए, स्वार्थ के लिए यह कथित नेता कुछ भी करने के लिए तैयार है। कल तक जो दुश्मन थे आज गले मिल रहे हैं, यहाँ सत्ता के लिए हाथी भी सायकल पर सवार हो सकता है, कल तक धनुष्यबाण को रोकने वाले हाथ आज उसके सहारे आगे जाने की सोच रहे हैं। कल तक जो संविधान विरोधी थे वे आज संविधान के रक्षक बनने का ढोंग रच रहे हैं इसलिए शायर कहते हैं,

ये सियासत का करिश्मा है हमारे दौर में,

तख्त पर बैठा हुआ विश्वास गद्दारी के साथ।

आज सोशल मीडिया ने हमारे रोजमर्रा के जीवन को काफी प्रभावित किया है। आज व्हाटस्अप और फेसबुक देखे बगैर हमारे दिन की शुरूआत ही नहीं हो रही है। इस सोशल मीडिया से सच्चाई की अपेक्षा अफवाहों का बडी मात्रा में प्रचार हो रहा है परिणामस्वरूप बेगुनाहों को भीड़ द्वारा मारा-पीटा जा रहा है। पिछले कई दिनो से यह 'मौब लिंचीग' बडी गंभीर समस्या बन चुकी है। इस गंभीर समस्या का मुख्य कारण हमारी अफवाहों को फैलाने की प्रवृत्ती है। इस गंभीर समस्या की ओर ध्यान देते हुए विनय जी अफवाहो को बमों की उपमा देते हैं जो कुछ पलों में ही हजारों की जिंदगियाँ तबाह कर सकता है। ग़ज़लकार के शब्दों में देखिए-

अफवाहों के बम हैं जिन्दा,

बातें भोली-भाली-गायब।

तरह तरह की आफतों में फँसे आम आदमी की स्थिति बहुत भयावह बन चुकी है, उसे हर स्तर पर, हर दिन, हर तरीके से, समझौता करना पड रहा है। अपना विचार, वैचारिक भूमिका यह बाते खूँटे पर टाँग कर उसे व्यवस्था से उपजी विडंबना का शिकार हो कर झूठे, बदमाशों की हाँ मे हाँ मिलाना पड रहा है। उसकी लाचारी, मजबुरी, विवशता शायद दिन ब दिन बड ही रही है। ग़ज़लकार दुष्यंत कुमार ने भी उस समय के आम आदमी की लाचारी को रेखाकिंत किया था। आज विनय मिश्र भी परिस्थितियों का शिकार हुए आम आदमी की विवशता को रेखांकित करते हुए लिखते हैं,

जितना चाहो झुक जायेंगे ये लोग लचीले हैं,

ये वो है जो अपने घर में बजार लगाते हैं।

अपने घर में ही किरायेदार हूँ,

सोचिए मैं किस कदर लाचार हूँ।

आज साहित्य की उपादेयता पर चर्चा चल रही है, इस चर्चा में कई लोग साहित्य की ओर नकारात्मक दृष्टि से देखकर उसकी उपयोगिता पर सवाल खडा कर रहे हैं। किंतु इस संदर्भ में ग़ज़लकार विनय मिश्र बडे सकारात्मक हैं। उनकी दृष्टी से, 'साहित्य समाज परिवर्तन का सशक्त माध्यम है' यह बात उन्होंने ग़ज़ल संकलन की भूमिका में भी लिखी है।साहित्य के माध्यम से होने वाले परिवर्तन पर उनको विश्वास है, और सच्चाई भी यही है। आज तक जितनी भी सामाजिक, राजनीतिक क्रांतियाँ हुई उनमें साहित्य की भूमिका बडी महत्त्वपूर्ण रही है। आपतकाल के भयावह इतिहास को दुष्यंत कुमार के

ग़ज़ल संग्रह 'साए में धूप' में अच्छी तरह से पढा जा सकता है। इसलिए शायर विनय मिश्र कविता की ताकत को रेखांकित करते हैं। साथ ही समकालीन कवियों को भी सख्त हिदायत देते हुँए कहते हैं,कविताएँ भी लड सकती हैं दुनिया की चालों से

ये कवि पर है अब वे कैसा किरदार निभाते हैं।

समसामयिक समाज की बेचैनी, भूख, लाचारी, बाजारवाद का गहरा प्रभाव आदि विषयों के अलावा विनय जी ने प्रस्तुत ग़ज़ल संकलन में ग़ज़ल विधा का पारंपरिक विषय श्रृंगारिकता पर भी चर्चा की है। समाज की तमाम समस्याओं से जूझने वाले इस शायर के दिल का एक कोना प्यार भरी शरारतों के लिए खाली है जिसमें वे अपनी रोमानी भूमिका विशद करते हैं-

कोई था नाम ऐसा भी सफर में,

जिसे हम बिन पुकारे जा रहे है।

मुझे कहा गया था मोड पर ही इंतजार कर,

उसे भी अब मलाल है मुझे भी अब पता चला।

अंतत: कहा जा सकता है कि विनय मिश्र का प्रस्तुत ग़ज़ल संकलन समसामयिक जीवन संघर्ष को रेखांकित करता है। शायर की समाज के प्रति जो आस्था, संवेदना है उसे उन्होने बिना किसी आडंबर के अभिव्यक्त किया है। इसलिए प्रस्तुत ग़ज़ल संग्रह पढते समय कहीं पर भी ऐसा लगता नहीं है कि हम कोई किताब पढ रहे हैं, बल्की यह अहसास होता है कि हम संवेदना के साथ समाज में सफर कर रहे हैं खुद शायर मानते हैं, उनकी दृष्टि से यह दिल की हलचले हैं जिसे मैंने साझा किया है। ग़ज़लकार के शब्दो में-

दिल की हर हलचल को मैंने

इन ग़ज़लों में आम किया है।

धरोहर

## दुष्यंत कुमार

ये जो शहतीर है पलकों पे उठा लो यारो
अब कोई ऐसा तरीक़ा भी निकालो यारो
दर्द-ए-दिल वक़्त को पैग़ाम भी पहुँचाएगा
इस कबूतर को ज़रा प्यार से पालो यारो
लोग हाथों में लिए बैठे हैं अपने पिंजरे
आज सय्याद को महफ़िल में बुला लो यारो
आज सीवन को उधेड़ो तो ज़रा देखेंगे
आज संदूक़ से वे ख़त तो निकालो यारो
रहनुमाओं की अदाओं पे फ़िदा है दुनिया
इस बहकती हुई दुनिया को सँभालो यारो
कैसे आकाश में सूराख़ नहीं हो सकता
एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो
लोग कहते थे कि ये बात नहीं कहने की
तुम ने कह दी है तो कहने की सज़ा लो यारो